चंदन की लेखनी

फूलों का रस

जयप्रकाश भारती

चंदन की लेखनी फूलों का रस

जयप्रकाश भारती

झिलमिल झिलमिल

रवीन्द्रनाथ ठकुर बालक थे, तब फूलों के रस से कविता लिखना चाहते थे। कुछ फूल लेकर उन्होंने रस निकाला-उसमें कलम की नोंक भी नहीं डूबी। लेकिन बड़े होकर उन्होंने ऐसा लिखा, जिसकी खुशबू सैकड़ों बरस बाद भी बाकी है। 'चंदन की लेखनी, फूलों का रस' - पुस्तक मे ऐसी रचनाएं है जो अमर रहेंगी। हमारे समय की विभूतियों ने बच्चों के लिए इतना रोचक लिखा है कि बार-बार पढ़कर भी मन नहीं भरता।

तीस साल पहले 'नंदन' पत्रिका ने एक यज्ञ शुरू किया था। बड़े लोगों से बच्चों के लिए लिखने को कहा जाए। अलग-अलग क्षेत्रों की शीर्ष विभूतियों ने उस अनुरोध को माना। इनमें कहानियां, संस्मरण, अनुभव और संदेश-सभी कुछ है। ये रचनाएं इससे पहले 'नंदन' में छप चुकी है। ऐसा भी हुआ कि किसी बड़े आदमी ने कुछ सुनाया, जो लिखा मेरे किसी सहयोगी ने। विशेष बात यह है कि भारत-रत्न श्रीमती इंदिरा गांधी से जब-जब भी मैंने अनुरोध किया, उन्होंने लिखकर दिया। बच्चों की हो या बड़ों की - किसी भी अन्य पत्र-पत्रिका के लिए उन्होंने नहीं लिखा। मोरारजी देसाई तो नौ बरस तक बाल पाठकों के प्रश्नों के उत्तर 'नंदन' में देते रहे तब भी जब वह प्रधानमंत्री रहे। कवि और जननेता अटलबिहारी वाजपेयी जी ने बहुत व्यवस्ता के बीच भी बच्चों के लिए लिखने की कृपा की।

यह पुस्तक हिन्दी तथा साहित्य के संरक्षक माननीय डॉ. कृष्णकुमार जी बिरला को सादर भेंट है। उन्हीं की प्रेरणा से 'नंदन' निकलता रहा और उसे बहुत सफलता भी मिली। देश-विदेश के लाखों बच्चे और बड़े पाठक भी आज 'नंदन' की राह देखते रहते हैं।

विश्वास है, यह रोचक और उपयोगी पुस्तक (दो भाग) अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचेगी। पुस्तकालयों और शालाओं में इसका भरपूर स्वागत हो सकेगा

- जयप्रकाश भारती

क्रम

मेरी पसंद की मिठाई है जलेबी - *वराहगिरि वेंकटगिरि* 4

एक था महात्मा - *काका कालेलकर* 7

'चुपके से मेरे पास आ बैठोगी' - *इंदिरा गांधी* 10

खुशी से करना चाहिए हर काम - *इंदिरा गांधी* 13

मुकदमा हारकर भी मैं जीत गया - *डॉ. गोपालस्वरूप पाठक* 14

मेरे ब्याह में रियासत की घोड़ी मंग़ाई गई - *बसप्पा दानप्पा जत्ती* 17

संसार की छत पर तिरंगा फहराया- *मनमोहन सिंह कोहली* 20

'नौ गोलियां धंस गई थीं मेरे शरीर में...' - *फील्ड मार्शल साम मानेकशा* 23

मैं शरारती था मगर पढ़ने लिखने में तेज था - *गोपाल गुरुनाथ बेवूर* 26

मेरी पहली जेल यात्रा - *मोरारजी देसाई* 30

दो शौक हैं मेरे - सितार बजाना : टाफी-चाकलेट खाना – *पं. रविशंकर* 33

खूब पढ़ता था और कसरत करता था - *हरगोविन्द खुराना* 36

मेरी पसंद की मिठाई है जलेबी

-वराहगिरि वेंकटगिरि

मेरा जन्म 10 अगस्त, 1894 को हुआ। मैं अपने स्वर्गीय पिता श्री वि.वि. जोगय्या की दूसरी संतान हूँ। मेरा जन्म स्थान गंजाम गांव है। यह गांव पहले चेन्नई प्रदेश के बरहमपुर जिले में था, अब उड़ीसा प्रदेश में है। वैसे हम लोग आंध्र प्रदेश के निवासी हैं। मेरे पूर्वज वहीं रहते थे। बाद में वे गंजाम गांव में आकर बस गये।

मेरे पिता सुप्रसिद्ध वकील होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम के जाने-माने सैनिक थे। वह 1927 से 1930 तक केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य भी रहे थे। मैं स्वतंत्रता संग्राम में आया, यह मेरे पिता की प्रेरणा ही थी।

मुझ में बचपन से ही देश के लिए कुछ कर दिखाने का चाव था, इसीलिए मैं कुछ-न-कुछ करता रहता था। 12 वर्ष की आयु में मैंने अपने मित्रों को साथ लगाकर 'युवक संघ' की स्थापना की। हमने मिलकर एक पुस्तकालय भी खोल डाला। आज यही पुस्तकालय बरहमपुर नगरपालिका का एक लोकप्रिय और नगर का सबसे अच्छा पुस्तकालय है।

गरीबों के लिए बचपन से ही मेरे मन में दर्द था। अनाथ और अपाहिज बच्चों को मैं आज भी देखता हूँ, तो मन भर आता है। मैं चाहता हूं मेरे देश का हर बच्चा सही ढंग से जीवन जीने की सुविधा पा सके। एक स्वतंत्र देश में जहां राष्ट्रीय सरकार हो, अनाथ शब्द अच्छा नहीं लगता।

जब मैं किशोर था, तो मैंने एक 'चैरिटी फंड' की स्थापना भी की थी। यह 'चैरिटी फंड' बिलकुल नये ढंग से चलता था। होता यह था कि मैं अपने साथियों की मदद से हर घर में एक-एक टोकरी रखवा देता था। हम घर की मालकिन से कहते थे कि वह हर रोज अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसमें चावल डाल दिया करे। इस तरह सप्ताह में जो चावल एकत्र हो जाता था, उससे एक लंगर चलाया जाता। उस लंगर में दूर-दूर से गरीब बच्चे आकर खाना जाते थे।

मैं सीनियर कैम्ब्रिज तक अपने ही देश में पड़ा। मैं अपने अध्यापकों का बहुत आदर करता था। स्कूल में कभी कोई ऐसा काम नहीं करता था जिससे अनुशासन टूटे। मैं प्रतिदिन स्कूल आकर अपने हैड मास्टर के चरण